ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 103-108**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

वर्तमान समाज में युवाओं में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति

डॉ0 अवधेश तिवारी

असि0 प्रोफेसर– समाजशास्त्र, सुमित्रानंदन पंत राजकीय महाविद्यालय, गरूड़– बागेश्वर (उत्तराखण्ड) भारत

Received-30.09.2025, Revised-07.10.2025, Accepted-12.10.2025 **E-mail : awadheshboss108@gmail.com**

***सारांशः** वर्तमान शोध पत्र युवाओं में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति पर आधारित है। यह शोध उत्तराखण्ड राज्य के बागेश्वर जनपद के युवाओं का एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करता हैं। वर्तमान अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि पहाड़ के दुर्गम वादियों में युवा नषे की तरफ आकृष्ट हो रहे हैं। तनाव की स्थिति, अकेलापन, तीज त्योंहारों में मनोरंजन करने की प्रवृत्ति तथा बुरी संगति इसके प्रमुख कारणों में से एका हैं। नशे की लत पड़ जाने पर युवा अपने धन के साथ–साथ अपने माता–पिता एवं अन्य संबंधियों से धन लेकर तथा चोरी करके भी मादक द्रव्य खरीद रहे है। यह शोध इसी का एक अन्वेषणात्मक व व्याख्यात्यमक अध्ययन प्रस्तुत करता है।*

कुंजीभूत शब्द– समाज, तनाव, सभ्यता, अकेलापन, तीज त्योंहार, मादक द्रव्य, मनोरंजन, प्रवृत्ति, बुरी संगति, कर्मठ, नशे की लत।

प्रस्तावना– भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, जहाँ पर युवाओं की जनसंख्या सर्वाधिक है। देश के युवा ही वहां के भविष्य को निर्धारित करते है। कर्मठ, तकनीकि ज्ञान से युक्त, एवं नशे कि प्रवृति से रहित युवा किसी भी देश को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है।

मादक द्रव्य व्यसन एक गम्भीर सामाजिक आर्थिक, वैयक्तिक समस्या के रूप में सम्पूर्ण मानव जाति को प्रभावित कर रहा है। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में मादक पदार्थों को उपविशा, सोमरस, गांजा, देवबूटी, विजया, मदिरा आदि नाम से पुकारा जाता था। प्राचीन ग्रीक सभ्यता द्वारा प्राप्त साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि अफीम का प्रयोग लगभग 500 ई0पू0 से चिकित्सा, निश्चेतक, दर्द रहित मृत्यु तथा अनुष्ठान के लिए किया जाता था Paul L.Scheff Jr (2002)। 400 ई0पू0 से 1200 ई0पू0 के बीच अरब के व्यपारियों द्वारा चीन तथा भारत में अफीम का व्यापार किया गया Philip Robson (1999)। दक्षिणी अमेरिका में लगभग 1000 वर्ष पूर्व से वहाँ के लोगों द्वारा कोका पत्ती चबाने की बात सामने आती है Attman AJ, Albert DM, Fournier GA (1985)। रिचर्ड विलस्टेटर द्वारा 1898 में कोकेन आणविक संश्लेषण की व्याख्या की गई Humphrey AJO' Hagan D (2001)। सभी मादक पदार्थों का सेवन प्राचीन काल से मानव समाज द्वारा मौज–मस्ती विलासिता पूजा अनुष्ठान तथा स्नायुमण्डल की प्रभावकता के लिए होता था, परन्तु वर्तमान समय में युवा पीढ़ी का आकर्षण विशेष रूप से इन पदार्थो के प्रति बढ़ता जा रहा है जो अत्यन्त चिंता का विषय है।

मादक द्रव्य को मूलतः छः भागो में बाँटा जा सकता है। सबसे पहले शराब का नाम आता है। कई देशों में संयमित मात्रा में इसका सेवन समाजिक रूप से अनुचित नहीं माना जाता, परन्तु भारत में यह एक समस्या के रूप में दिखाई देता है। शराब एक शान्तिकारक पेय पदार्थ के रूप में कार्य करते हुए नसों को शान्त एवं संवेदनहारी बनाते हुए तनाव को कम करता है। यह द्विविधा उत्पन्न करती है तथा अत्यधिक सेवन से निर्णय लेने की क्षमता मन्द होने लगती है।

इसका बहुत समय तक सेवन यकृत को प्रभावित करता है। दूसरे स्थान पर शामक या अवसादक मादक द्रव्य होते है जिसका सेवन केन्द्रीय नाड़ी मण्डल को असक्त करते हुए नीद उत्पन्न करता है। इसका शान्तिपरक माना जाता है। इन मादक द्रव्यों का प्रयोग चिकित्सीय दृष्टिकोण से उच्च रक्त चाप अपस्मार,अनिद्रा, शल्य चिकित्सा के पूर्व या बाद में रोगियों के अंग शिथिलीकरण या आराम के काम में लाया जाता है। इस श्रेणी में ट्रक्विलाइजर, बार्बिटयुरेटर आते है, जो नसों एवं मांसपेशियों की क्रियाओं की गति को कम करते है। इसका कम मात्रा में सेवन दिल की धड़कन एवं सांस लेने की गति को कम कर देते है परन्तु ज्यादा मात्रा में सेवन व्यक्ति को उदासीन, आलसी, निष्क्रिय व चिड़चिड़ा बना देता है। इन पदार्थों से भावात्मक नियंत्रण कमजोर होता है तथा सोचने व ध्यान करने की शक्ति का ह्रास होता है तथा तीसरे स्थान पर उत्तेजक पदार्थ आता है, जो केन्द्रीय नाड़ी मण्डल को क्रियाशील बनाते हुए अवसाद को कम तथा अनिद्रा को बढ़ाते है। इसके सेवन से थकान, आलस्य कम होता है। उत्तेजक मादक द्रव्य में ऐम्फेटामाइन (पेप गोली), कोकीन व कैफीन प्रमुख रूप से है। इनको मौखिक व इंजेक्शन दोनों द्वारा ग्रहण किया जाता है। अपराध जगत में ऐम्फेटामाइन– अपर्स या पेपपिल्स ड्रग के नाम से मशहूर है Coombs H.Robert and Ziedonies(1995)। चौथे मादक द्रव्य के रूप में तंद्राकारक पदार्थ को जाना जाता है, जो उनीदा बनाना, चिन्ता समाप्त करना उदासी को मिटाना, प्रशन्न दिखाना, भूख न लगना तथा श्रेष्ठता की भावना उत्पन्न करते है। इनमें अफीम (स्मैक, ब्राउन शुगर, मारजुआना, मारफीन, पैथडीन) कैनाबिस (चरस, भांग,गाजा) प्रमुख है। हेरोइन एक सफेद पाउडर है जो मारफीन से बनाया जाता है। हेरोइन, मार्फीन, पेथेडीन और कोकीन कश या इंजेक्शन द्वारा शरीर में लिया जाता है जबकि अफीम व मारजुआना धुम्रपान या नाक से ऊपर खींचकर लिया जाता है। इसको बंद कर देने पर 8 से 12 घंटे बाद व्यसनी को कंपन, पसीना, ठिठुरन, दस्त, मरोड आदि प्रारम्भ हो जाता है जो 36 से 72 घंटे के मध्य शिखर पर होता है। 5 से 10 दिन के बाद इन लक्षणों में गिरावट आती है परन्तु कुछ सप्ताह तक इसके लक्षण बने रह सकते है। पाँचवें भ्रमोत्पादक पदार्थ होते है जिनके सेवन से व्यक्ति किसी भी चीज को वास्तविक रूप में न देख सुन कर नये तरीके से देखता सुनता है। व्यक्ति वास्तविकता से दूर सपने देखता है। इसके सेवन की सलाह डाक्टर कभी नहीं देते है। इस श्रेणी में रासायनिक पदार्थ स्कै आता है जो इतना शक्तिशाली होता है कि इसके एक तोले से तीन लाख से अधिक डोज बनाया जा सकता है। यह सफेद गोली, क्रिस्टलीय तरल पदार्थ के रूप में उपलब्ध होता है। यह 8 से 10 घंटे तक प्रभावी होता है। LSD के बन्द करने से अतिभय अवसाद, तीव्र मानसिक असंयम पैदा हो जाता है, रजोरा सुरेश चंन्द्र (2010)। छटे स्थान पर ताम्रकूटी या निकोटीन युक्त पदार्थ आते है। तम्बाकू की खेती भारत में कई स्थानों पर की जाती है। जिसके चौड़े पत्ते कड़वे होते है। इसका कोई चिकित्सीय उपयोग होता है, परन्तु यह केन्द्रीय नाड़ी मंडल को उतेजित करता है तथा उबाऊपन को दूर करता है। इसमें सिगरेट, बीड़ी, गुटखा, नास आदि प्रमुख रूप से आते है इसका तीन प्रकार से सेवन धुम्रपान द्वारा, सूंघने से पान में रखकर या चूने के साथ मलकर किया जाता है। इसके अधिक मात्रा में सेवन से दिल की बिमारी, फेफड़े का कैंसर, मुह का कैंसर आदि हो सकता है। इनमें अवसादक, उतेजक, तंद्राकारक तथा भ्रमोत्पादक पदार्थ को मनोक्रियाशील पदार्थ की श्रेणी में रखा जाता है, आहूजा राम (2002)।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

वर्तमान परिप्रेक्ष्य– मादक द्रव्य व्यसन या नसीली दवाओं के सेवन इतनी मात्रा में करना या ऐसे तरीके से उपयोग करना जो व्यक्ति के लिए हानिकारक हो मादक द्रव्य दुरूपयोग के रूप में देखा जाता है। मादक द्रव्य द्वारा शारीरिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक नुकसान तो होता ही है साथ ही साथ स्थानीय आधार पर दण्ड की व्यवस्थता भी निश्चित होती है, मोस्बी, सेंट लुइस (2002)। 1972 ई0 ने अमेरिकन साइकेट्रिक एसोशिएशन द्वारा वैधता, सामाजिक स्वीकार्यता व सांस्कृतिक परिचितता के आधार पर यह विश्लेषण किया गया, कि सीमित संख्या में पदार्थों के अवैध, गैर चिकित्सकीय उपयोग पर लागू करने के लिए आरक्षित रखते है, जिनमें अधिकांशतः सामाजिक मानदण्डों द्वारा माने जाने वाले तरीके से मानसिक स्थिति को बदलने के गुण होते है। कानून द्वारा अनुपयुक्त, अवांक्षनीय, धमकी देने वाला या विदेशी संस्कृति के रूप में परिभाषित किया गया है, ग्लासकोट रेमण्ड एम0 ससेक्स जेम्स एन0 जाफ जेरोम एच0 बाल जान, ब्रिल लियोन (1972)। 2017 में अवैध मादक पदार्थों के सेवन से होने वाली विकारों से सीधी तौर पर 585000 मौतें हुई है,रूड रोज ए0: एलेशायर नूह, जिबेल जान ई0 (Jan- 2016) । विश्व औषिधि रिपोर्ट 2019 के अनुसार, दुनिया भर में 35 मिलियन लोग नशीली दवाओं के उपयोग से संबंधित विकारों से पीड़ित है, जिनमें किसी एक व्यक्ति को उपचार मिल पाता है, विश्व औषधि रिपोर्ट (2018)। मादक द्रव्य की प्रांसगिकता इस आधार पर और बढ़ती जा रही है कि 2000 से 2015 तक शराब के अलावा नशीली दवाओं के उपयोग से प्रत्यक्ष मौतों की दर में 60 : से अधिक की वृद्धि हुई। संयुक्त राष्ट्र संघ के एक सर्वेक्षण (2018) के अनुसार, बुजुर्ग लोगों की अपेक्षा युवाओं में मादका द्रव्य के सेवन की प्रवृत्ति अधिक है जो अत्यंत चिंता का विषय बना हुआ है। ज्यादातर शोधकर्ताओं का मानना है कि युवाओं में 12–17 वर्ष के आयु वर्ग की अपेक्षा 18–25 वर्ष की युवाओं में नशे के सेवन करने की प्रवृति ज्यादा है। भारत में इसके सेवन की भयावहता और बढ़ती जा रही है।

मादक द्रव्य व्यसन से सम्बन्धित अध्ययन–

(A) अन्तर्राष्ट्रीयः वर्तमान में मादक द्रव्य व्यसन विश्व की सबसे घातक समस्या है, जिसके द्वारा अनेक युवा अनेक गम्भीर बिमारियों का शिकार हो रहे है। संयुक्त राष्ट्र की महासभा द्वारा विश्व स्वस्थ्य संगठन से यह सिफारिश की गयी, कि 2000 ई0 तक सभी राष्ट्र अपने यहाँ मादक द्रव्य 25% तक कम करें। मादक द्रव्य का सिडिंकेट काफी शक्तिशाली होता है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा स्वयं खतरे में दिख रही है क्योंकि इसका उत्पादन किसी एक देश में होता है, संसाधित दूसरे देश में, तस्करी तीसरे देश के माध्यम से होती है, क्रय चौथे देश के माध्यम से होता है तथा तस्करी का लाभ पाँचवे देश को मिलता है। इसके लिए अंताराष्ट्रीय पुलिस अपराध संगठन (इण्टरपोल) व विश्व सीमा शुल्क संगठन मिलकर कार्य कर रहा है। जॉन्सन एल0डी0, ओमैली पी0एम0, बैचमैन जे0जी0, सुलेनबर्ग जे0ई0 (2011) के अनुसार 48.2% छात्रों ने अपने जीवन में किसी न किसी समय अवैध दवा के उपयोग की बात कही 1 महीने में 12 वीं0 के 41.2% छात्रों ने शराब के उपयोग करने की बात तथा 19.2% छात्रों ने तम्बाकू या सिगरेट पीने की बात कही। बार्कर फिलिप जे0 (2003) मनोरोग एवं स्वास्थ्य नर्सिंग कला लंदन ने अपने अध्ययन में पाया कि 140 मिलियन लोग शराब पर निर्भर है जबकि 400 मिलियन लोग शराब से सम्बन्धित विकारों से ग्रसित है।

सी0डी0सी0 न्यूज रूप प्रेस विज्ञप्ति (2010) (https:www.cdc.gov.media:) अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका में हाईस्कूल के 21% छात्रों ने बिना डाक्टरी सलाह के दवाओं के सेवन की बात कहीं।

द ग्लोबल ड्रग ट्रैड – BBC समाचार (2000) के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के अनुसार हिरोईन, कोकीन, सियेरिक दवाओं 50 मिलियन से अधिक उपयेगकर्ता है।

राष्ट्रीय औषधीय दुरूपयोग संस्थान न्यैण। (17 SEP 2022) अत्यधिक खुराक से 70200 अमेरिकन नागरिकों की मुत्यु हुई जिसमें फेटेनाइल, सेथेटिक ओपिओआइड दवाओं से मौत का प्रतिशत सर्वाधिक रहा।

(B) राष्ट्रीयः भारत में मादक द्रव्य के दुरूपयोग से संबंधित अध्ययन विद्यार्थियों में, औद्योगिक श्रमिको में, ग्रामवासियों का एवं गंदी बस्ती में रहने वाले लोगों का किया गया इससे सम्बन्धित अध्ययन को एकल अध्ययन, संयुक्त अध्ययन बहुकेन्द्रीय अध्ययन के रूप में विभाजित किया जा सकता है। डॉ0 मोहन (अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली) द्वारा 1976 में 7 शहरों का तथा 1986 में 9 शहरों का अध्ययन किया गया तथा परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा 1986 में 9 शहरों का अध्ययन किया गया तथा परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा 1996 में एक केन्द्रीय अध्ययन किया गया जिससे स्पष्ट होता है कि शहरों में शराब, सिकोट व निकोटिन को निकाल दिया जाय, तो अन्य मादक द्रव्य का सेवन 4% से 6% के बीच होता है। तथा मादक द्रव्यों का सेवन पेशेवर व गैर पेशेवर रूप में अलग–अलग मिलता है। राम आहूजा (1986,जयपुर) ने अपने अध्ययन में पाया कि मादक द्रव्यों का सर्वोच्च सेवन वाणिज्य, कला व सामाजिक विज्ञान में तथा कम सेवन मेडिकल, इंजीनियरिंग व विधि में है। 90% विद्यार्थी मादक द्रव्य का सेवन सप्ताह में एक बार या इससे कम 9% नियमित रूप से तथा 1% विद्यार्थी मादक द्रव्य व्यसन के व्यसनी रहे जिसमें 6% से 10% विद्यार्थी शराब तम्बाकू को छोड़कर अन्य द्रव्य लेते है, जिसमें 20% पीड़ा नाशक, 35% तंद्रकारक, 5% से 7% तक उतेजक तथा 1% विद्यार्थी भ्रमोत्पादक पदार्थ लेते है। औद्योगिक श्रमिकों पर गंग्रोड एवं गुप्ता (1970 नयी दिल्ली) ने शोध में पाया कि औद्योगिक श्रमिकों में मादक द्रव्य लेने का प्रचलन कॉलेज के विद्यार्थियों की अपेक्षा काफी कम है जिसमें ज्यादातर ने बिना किसी चिकित्सकीय नुक्से के इसका प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया था, जिनकी आयु 20 वर्ष से 30 वर्ष वालों के बीच अधीक थी, जिसमें 65% शराब 18% चरस लेने वालों की मात्रा अधीक थी। ग्रामीण क्षेत्र के अध्ययन में गुरमीत सिंह (1978, पंजाब) में यह प्राप्त होता है कि 29% से अधिक व्यक्ति 10 वर्ष से अधिक समय से मादक द्रव्य का सेवन कर रहे थे, जिनमें 40% तंबाकू, 26% शराब, 19% अफीम, 20% गाँजा व भांग का सेवन कर रहे थे। सेठी व त्रिवेदी (1977) ने ग्रामीण समाज के अध्ययन में पाया कि मादक द्रव्य व्यसन की दर 25% थी जिनमें 82% शराब, 16% गांजा व चरस तथा 11% अफीम का सेवन करते थे। परिवार कल्याण मंत्रालय दिल्ली द्वारा करवाए गए सर्वेक्षण (1995) के अनुसार, मादक द्रव्य व्यसन करने वालों की अधिक संख्या 44% युवा है। इस अध्ययन से यह भी साफ होता है कि मादक द्रव्य व्यसन बड़े शहरों से छोटे शहरों तथा बड़े तथा सीमांत राज्यों से छोटे राज्यों की तरफ अपना पैर फैला रहे है। वर्तमान उत्तराखण्ड राज्य भी दूसरा उड़ता पंजाब बन रहा है, जिसमें ड्रग की आपूर्ति बरेली के रास्ते निरंतर बड़ रही है।

अध्ययन की समस्या– वर्तमान अध्ययन की समस्या मादक द्रव्य व्यसन की भयावहता का विशलेषण करना तथा यह ज्ञात करने का प्रयास करना है कि किन परिस्थितियो अथवा कारणों से मादक द्रव्य का प्रयोग व्यक्ति शुरू करता है। सरकारी सहायता प्राप्त गैर सरकारी संगठन या नशा मुक्ति केन्द्र द्वारा किस प्रकार मध्य व्यसनियों को जागरूक किया जाता है तथा किस हद तक ये संस्थाए व्यसन को छुड़ाने में सहायक होते है। समकालीन समाजिक परिवर्तन के स्वचलित प्रक्रिया, जैसे वैश्वीकरण, औद्योगिकरण, नगरीकरण, प्रौद्योगिकी, सूचना तन्त्र किस प्रकार मादक द्रव्य दुरूप्योगों की प्रक्रिया को प्रभावित करते है।

मानव समाज का मानसिक, शारिरिक बौद्धिक ह्रास करने वाले ये मादक पदार्थ किस प्रकार आज पूरी विश्व के तस्करी का कारण तथा कमाई का जरिया बने हुए है। मादक द्रव्य व्यसन किसी देश के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पारिवारिक एवं वैयक्तिक विघटन उत्पन्न करके किसी देश व समाज को अक्षम बनाते हुए मानवता को शर्मसार करते है।

उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हिमालय की गोद में स्थित पंचबद्री, पंचकेदार, गंगोली, यमुनोत्री जैसे तीर्थ स्थलों से शोभायमान देवभूमि के नाम से विख्यात उत्तराखण्ड में मादक द्रव्य व्यसन से प्रभावित व्यसिनियों का अध्ययन करना है इसका उद्देश्य यह पता लगाना है कि वे कौन से कारक है जिसमें युवाओं में व्यसन की प्रवृति बड़ रही है। उत्तराखण्ड राज्य अंतराष्ट्रीय सीमा पर स्थित है, जिसमें अन्य राज्यों से जुड़ा मैदानी जनपद तथा तराई भाग व पहाड़ी क्षेत्र शामिल है, जिसमें यहाँ काफी विविधता देखने को मिलती है। इस राज्य के अध्ययन द्वारा देश के पहाड़ी मैदानी व सीमांत क्षेत्रों में मादक द्रव्य व्यसन का विशलेषण किया जा सकेगा। इस अध्ययन का मूलभूत उद्देश्य निम्नलिखित है:

1. मादक द्रव्य व्यसनियों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व मनों समाजिक स्थिति का पता लगाना।
2. मादक द्रव्य व्यसन के चिकित्सकीय (व्याधिकीय) तथा शारीरिक कारणों का पता लगाना।
3. उन परिस्थितियों की खोज करना जो युवाओं में मादक द्रव्य व्यसन को बढ़ावा देते है।
4. उन परिस्थितियों की खोज करना जो युवाओं में नवीन प्रवृतियों को बढ़ावा देते है।
5. पर्वतीय एवं मैदानी क्षेत्र में मादक द्रव्य व्यसन की विविधता का अध्ययन करना।
6. सरकारी नशा मुक्ति केन्द्र तथा गैर संस्था का मादक द्रव्य व्यसन की विव्यसन की स्थिति का पता लगाना।

परिकल्पना– शोध को केन्द्रित एवं दिशा निर्देशित करने के लिए उपकल्पनाओं का सहारा लेना आवश्यक होता है प्रस्तुत शोध से संबन्धित उपकल्पनाए निम्नवत है:

1. मादक द्रव्य सेवन की प्रवृति युवा विद्यार्थियों में बड़ी तेजी के साथ बढ़ राही है।
2. शराब के सेवन की प्रवृति अन्य मादक द्रव्य की अपेक्षा युवाओं में ज्यादा है, जबकि बुजुर्गों में निकाटिन युक्त पदार्थ लेने की प्रवृत्ति है।
3. सबसे ज्यादा लोग मनो सामाजिक कारण मादक द्रव्य व्यसन का सेवन करते है।
4. शारीरिक रूप से दोषपूर्ण व्यक्तियों में सामान्य लोगों की अपेक्षा मादक द्रव्य सेवन की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है।
5– मादक द्रव्य का आदी होने पर पुनः उसके समाज के मुख्य धारा में आने की संभावना कम होती है।
6. मादक द्रव्य का सेवन करने वाले अधिकांशतः व्यक्ति एक आदत के रूप में इसका सेवन नहीं करते है।
7. सिनेमा, विभिन्न चैनल इण्टरनेट एवं संचार माध्यम मादक द्रव्य को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते है।

अध्ययन का महत्व– प्रस्तुत शोध परियोजना की प्रासंगिकता दिन व दिन बढ़ती जा रही है, क्योंकि भारत दो ड्रग उत्पादक क्षेत्र गोल्डन क्रिसेट (ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान) तथा गोल्डेन ट्रायंगल (थाइलैण्ड, लाओस, म्यमार) के बीच स्थित है, जो अवैध पदार्थों की दृष्टिकोण से अत्यधिक संवेदनशील बनाता है। भारत ही नहीं पूरे विश्व में युवाओं में मादक द्रव्य का बढ़ता प्रचलन चिन्ता का विषय बना हुआ है। भारत विश्व का सबसे बड़ा युवा देश है। अतः इसकी प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। वर्तमान का शोध का प्रमुख महत्व निम्नवत है:

1. भारत युवाओं का देश है। युवाओं में मादक द्रव्य के सेवन के कारण को जानकर इनको जागरूक एवं उन्नत बनाया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध का महत्व इस दृष्टिकोण से भी है कि इसके द्वारा सामाजिक एवं आर्थिक विघटन को दूर किया जा सकता है।
3. मादक द्रव्य सेवन से अपराध की प्रवृत्ति बढ़ जाती है अतः शोध द्वारा प्राप्त निष्कर्ष के द्वारा इसकी गति को कम किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध के माध्यम से शारीरिक ,मानसिक रूग्णता, वैयक्तिक विघटन एवं अन्य समाज विरोधी प्रवृत्तियों में कमी आयेगी।
5. एक स्वस्थ एवं सशक्त राष्ट्र के निर्माण में इस प्रकार का शोध एक नया आयाम प्रदान करेगा।
6. समाज में बिगड़ते पारिवारिक रिश्ते, सामाजिक संबंध को इस परियोजना द्वारा एक दिशा मिलेगी।

इस शोध की प्रासंगिकता इस दृष्टिकोण से भी है कि इसमें समाज में युवाओं के जीवन को समझते हुए उनको आगामी भविष्य के लिए तैयार किया जा सकता है जो स्वास्थ शिक्षित एवं उद्यमशील राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाएगा।

शोध प्रारूप– प्रस्तुत शोध परियोजना अन्वेषणात्मक विवरणात्मक तथा निदानात्मक शोध प्रचरना पर आधारित एक आनुभविक प्रकृति का है। इस परियोजना के अन्तर्गत मादक द्रव्य व्यसन करने वाले उत्तरदाताओं का सामाजिक,आर्थिक, धार्मिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक मनो सामाजिक अध्ययन के आधार पर व्यसन की तह तक जाने का प्रयास किया जायेगा तथा उन परिस्थितियों का विशलेषण करने का भी प्रयास किया जायेगा, जिनसे वर्तमान युवा पीढ़ी का नशे के सेवन प्रति प्रवृति बढ़ रही है। व्यसन से पीड़ित रोगियों के निदान के प्रभावोत्पादकता का भी अध्ययन किया जायेगा। मूलतः इस भयावह समस्या के कारण प्रभाव एवं गति प्रदान करने वाले कारकों का सामान्दीकरण करके समाजवैज्ञानिक निहितार्थ को उजागर किया जायेगा।

अध्ययन का समग्र एवं निदर्शन– प्रस्तुत अध्ययन का समग्र उत्तराखण्ड राज्य का कुमाऊँ मण्डल है। उत्तराखण्ड राज्य 09 नवम्बर 2000 को एक लम्बे आंदोलन के बाद प्रभाव में आया (यह राज्य 2000 से 2006 तक उतरांचल राज्य के नाम से जाना गया परन्तु स्थानीय लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए जनवरी 2007 से इस राज्य का नाम आधिकारिक नाम उत्तराखण्ड कर दिया गया।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से उत्तराखण्ड राज्य अत्यंत समृद्धशाली है जहाँ पर बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री जैसे तीर्थ स्थल अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल कुल 53483 वर्ग किमी0 है। उत्तराखण्ड का भौगोलिक क्षेफल $28^0 43'$ उत्तरी से $31^0 27'$ उतरी तथा $77^0 34'$ पूर्वि से $81^0 02'$ पूर्वी के बीच अवस्थित है। उत्तराखण्ड के विशिष्ट परिस्थिति तन्त्र में बड़ी संख्या में पशुओं के साथ दुलर्भ जड़ी बूटियाँ पायी जाती है।

उत्तराखण्ड में कुमाऊँ तथा गढ़वाल दो मण्डल है। कुमांऊँ मण्डल में 06 जिले तथा गढ़वाल मण्डल में 07 जिले स्थित है। वर्तमान अध्ययन का समग्र कुमांऊँ मण्डल है, जिसकी उत्पत्ति संस्कृत के 'कूर्म' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ कछप से है। कुमांऊँ के मूल निवासी यक्ष, किरात, किन्नर, कुलिंग व खस आदि है, जिसका विवरण महाभारत में मिलता है। इसमें राज्य सभा की 01 सीट तथा लोक सभा की 02 सीटें स्थित है तथा 36 विकास खण्ड है। मादक पौधें की दृष्टि से भांग का पौंधा पर्वतीय क्षेत्रों में बहुतायत

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

पाया जाता है। कुमांऊँ के अंतर्गत स्थित नशा मुक्ति केन्द्र तथा गैर सरकारी संगठन अथवा सरकारी संस्थाओं से दैव निर्देशन की लाटरी पद्धति द्वारा 400 मादक द्रव्य का दुरूपयोग करने वालों का चयन किया जायेगा जिनमें मैदानी भाग एवं पर्वतीय क्षेत्र दोनों के उत्तरदाओं को शामिल किया जायेगा।

आकड़ों के स्रोत्र– वर्तमान शोध की प्रकृति के आधार पर प्राथमिक एवं द्वैतीयक दोनों प्रकार के स्रोत्रों का यथोचित उपयोग किया जायेगा। अध्ययन को वैज्ञानिक व स्पष्ट बनाने के लिए साक्षत्कार अनुसूची, साक्षात्कार व अवलोकन तथा वैयक्तिक अध्ययन पद्धति जैसे प्राथमिक स्रोत्रों का प्रयोग करके प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया जायेगा। शोध के संबन्ध में व्यापक जानकारी प्राप्त करने के लिए गजट, पुस्तके, पत्र–पत्रिकाएँ, प्रकाशित व अप्रकाशित शोध प्रबंध, रिपोर्ट, सरकारी एवं गैर सरकारी प्रपत्र एवं प्रतिवेदन आदि द्वैतीयक स्रोंत्रों का उपयोग किया जायेगा।

तथ्यों का संग्रहण वर्गीकरण विशलेषण एवं व्याख्या– अध्ययन से प्राप्त तथ्यों को विभिन्न आधारों पर वर्गीकरण किया जायेगा। प्रस्तुत शाध में साक्षात्कार अनुसूची अवलोकन, साक्षात्कार,वैयक्तिक अध्ययन के माध्यम से प्राप्त आकड़ों को विभिन्न आधारों पर अध्ययन के उद्देश्य को देखते हुए वर्गीकरण किया जायेगा। वर्गीकरण के पश्चात अध्ययन से प्राप्त तथ्यों का विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का उपयोग कर उनका विश्लेषण किया जायेगा। विश्लेषण के पश्चात युवाओं में मादक द्रव्य व्यसन के कारण एवं प्रभाव की व्याख्या एवं निष्कर्ष प्रतिपादित किया जायेगा।

मादक द्रव्य व्यसन करने वालों की स्थिति एवं स्रोत–

1. पारिवारिक सरंचना–

क्र0सं0	परिवार	संख्या	प्रतिशत
1	संयुक्त परिवार	06	30
2	एकल परिवार	12	60
3	अन्य	02	10
	कुल	**20**	**100**

मानव के व्यक्तित्व विकास में परिवारिक संरचना का महत्वपूर्ण स्थान होता है, बागेश्वर जनपद के चुने गये उत्तरदाताओं में 30% उत्तरदाता संयुक्त परिवार के रहे। 60% उत्तरदाता एकाकी परिवार के रहे तथा 10% उत्तरदाता परिवारिक संरचना के अन्य प्रकारों से संबंधित रहे। इन प्राथमिक आकड़ों से यह तथ्य सामने आता है कि नशे के सेवन करने वालों में एकल परिवार के ज्यादतर लोग सम्मिलित होते है।

2. शैक्षणिक स्तर–

क्र0सं0	शिक्षा	संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षित	01	5
2	प्राइमरी /मिडिल स्तर	02	10
3	हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट	10	50
4	स्नातक/स्नातकोत्तर	03	25
5	व्यवसायिक शिक्षा	04	20
	कुल	**20**	**100**

शिक्षा को परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में जाना जाता है। शिक्षा से व्यक्ति का सर्वांगिण विकास होता है। चयनित उत्तरदाताओं में 5% उत्तरदाता अशिक्षित थे, 15% उत्तरदाता प्राइमरी/मिडिल पास, 50% उत्तरदाता हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट पास रहे तथा 15% उत्तरदाता स्नातक/स्नाकोत्तर उर्तीण थे तथा 20% उत्तरदाता व्यवसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले रहे। इस प्रकार सर्वाधिक मादक द्रव्य का व्यसन करने वाले उत्तरदाता हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट उर्त्तीण रहे।

3. आर्थिक स्थिति– वर्तमान भौतिकवादी युग में आर्थिक स्थिति का बहुत बड़ा महत्व है। आर्थिक संरचना ही भौतिक सुविधाओं, स्वास्थ्य दशाओं, आश्रितों के भरण पोषण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उत्तरदाताओं में रू0 5000 मासिक आय से कम वाले मादक द्रव्य व्यसन करने वाले उत्तरदाता 10%, रू0 5000 से रू0 10000 तक के मासिक आय वाले 40% तथा रू0 20000 से ऊपर के आय वाले 30% उत्तरदाता रहे। रू0 10000 से ऊपर मासिक आय वाले उत्तरदाता मादक द्रव्य व्यसन करने वालों में सर्वाधिक रहे। अत्यंत कम मासिक आय वाले आय वर्ग का प्रतिशत सर्वाधिक कम रहा।

क्र0सं0	मासिक आय	संख्या	प्रतिशत
1	रू0 5000 से कम	2	10
2	रू0 5000 से 10000 तक	4	20
3	रू0 10000 से 20000 तक	7	35
4	रू0 20000 से ऊपर	7	35
	योग	**20**	**100**

4. **मादक पदार्थ लेने की शुरूवात–** मादक द्रव्य लेने के कई कारण होते है। कहीं से किसी न किसी कारण से नशा लेने की शुरूवात व्यक्ति के द्वारा की जाती है। नशे के मूल में कोई न कोई कारण अवश्य होता है।

क्र0सं0	मादक द्रव्य की शुरूवात	संख्या	प्रतिशत
1	साथियों के साथ	5	25
2	तीज, त्यौहार या उत्सव, विवाह	8	40
3	किसी पारिवारिक तनाव या गम को भुलाने में	2	10
4	थकान को मिटाने में	3	15
5	अन्य	2	10
		20	**100**

चुने गये उत्तरदाताओं में मादक द्रव्य के व्यसन की पहली बार शुरूवात करने के प्रश्न में 30% उत्तरदाताओं ने साथियों के संगति में आकर मादक द्रव्य व्यसन के शुरूवात करने की बात कही, 40% उत्तरदाताओं ने तीज, त्यौहार,उत्सव विवाह आदि से नशे की बात

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

लेने को स्वीकार किया, 5% उत्तरदाताओं ने किसी गम को भुलाने में प्रथम बार नशे को लेने की बात कही, 15% उत्तरदाताओं ने थकान को मिटाने में मादक द्रव्य लेने की बात कही, 10% उत्तरदाताओं ने अन्य कारणों से नशा लेने की बात को स्वीकार किया। इस प्रकार ज्यादातर 40% उत्तरदाताओं ने विवाह, उत्सव तीज, त्यौहार से नशे को लेने की बात को स्वीकार किया।

5. ड्रग लेने का स्थान–

क्र0सं0	मादक द्रव्य व्यसन करने का स्थान	संख्या	प्रतिशत
1	घर पर	8	40
2	परित्यक्त भवन	2	10
3	निर्जन स्थान	8	40
4	अन्य स्थान	2	10
	योग		**100**

ड्रग को सार्वजनिक स्थान पर लेने से सभी बचते है। अतएव इसका सेवन अन्य स्थानों पर किया जाता है। 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने मादक द्रव्य को घर पर लेने की बात कही, 10% उत्तरदाताओं ने परित्यक्त भवन में मादक द्रव्य लेने की बात कही, 40% उत्तरदाताओं ने निर्जन स्थानों पर मादक द्रव्य व्यसन करने की बात कही तथा 10% उत्तरदाताओं ने अन्य स्थानों पर मादक द्रव्य ग्रहण करने की बात कही।

6. नशे का प्रकार– समाज में कई प्रकार के नशे पाये जाते है, जिसमें तम्बाकू, शराब, भांग गाजा, चरस, हिरोइन, अफीम एवं अन्य प्रकार के नशे का प्रचलन पाया जाता है:

क्र0सं0	नशे का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1	शराब	2	50
2	गांजा, भांग, चरस	10	20
3	हिरोइन, अफीम	6	20
4	अन्य	2	10
	कुल	**20**	**100**

बागेश्वर जनपद के उत्तरदाताओं में 10% उत्तरदाताओं ने L.S.D , 50% उत्तरदाताओं ने ष्शराब तथा गाजा, भांग, चरस, 20% उत्तरदाताओं ने लेने की बात कही। हिरोइन, अफीम, 20% उत्तरदाताओं ने तथा 10% उत्तरदाताओं ने अन्य प्रकार के मादक द्रव्य व्यसन करने की बात कही। प्राप्त आकड़ों से यह पता चलता है कि ज्यादातर लोग शराब लेने की बात स्वीकार करते है।

7. नशा प्राप्त करने की माध्यम– मादक द्रव्य ग्रहण करने वाले कई प्रकार के स्रोत से नशा प्राप्त करते है। पहाड़ी डीलर के माध्यम से ज्यादातर मंगवाया जाता है।

क्र0सं0	नशा प्राप्त करने का माध्यम	संख्या	प्रतिशत
1	डीलर	12	60
2	मित्र	1	5
3	दुकान	4	20
4	अन्य	1	5
	योग	**20**	**100**

चुने गये उत्तरदाताओं में ज्यादातर 60% उत्तरदाताओं ने डीलर के माध्यम से नशा प्राप्त करने की बात कही, 5% उत्तरदाताओं ने मित्र के माध्यम से नशे लेने की बात कही, 20% उत्तरदाताओं एक निश्चित दुकान से मादक द्रव्य लेने की बात कही वहीं 5% उत्तरदाताओं ने अन्य को इसका सत्रोत बताया।

8 मादक द्रव्य खरीदने का स्रोत– मादक द्रव्य ग्रहण करने वाले आदती होने कारण अपनी कमाई से या धनाभाव में अपने संबंधीयों की आय के माध्यम से मादक द्रव्य खरीदते है:

क्र0सं0	मादक द्रव्य खरीदने का स्रोत	संख्या	प्रतिशत
1	स्वयं की आमदनी से	14	70
2	मता–पिता की आय से	4	20
3	अन्य	2	10
	योग	**20**	**100**

चुने गये उत्तरदाताओं में 70% उत्तरदाताओं ने स्वयं के आय से मादक द्रव्य खरीदने की बात कही, 20% ने माता–पिता के आय से मादक द्रव्य खरीदने की बात कही, 10% उत्तरदाताओं ने अन्य स्रोत के आधार पर मादक द्रव्य खरीदने की बात स्वीकार की।

9. पहली बार मादक द्रव्य लेने की उम्र–

क्र0सं0	पहली बार मादक द्रव्य लेने की उम्र	संख्या	प्रतिशत
1	12 वर्ष से पूर्व	1	5
2	12 – 16 वर्ष	6	30
3	16–20 वर्ष	10	50
4	20–24 वर्ष	2	10
5	24 वर्ष के पश्चात	1	15
	योग		**100**

चुने गये उत्तरदाताओं में पहली बार मादक द्रव्य ग्रहण करने मात्र 5% उत्तरदाता ऐसे थे, जिसमें 12 वर्ष पूर्व मादक द्रव्य ग्रहण वाले रहे। 12 वर्ष से 16 वर्ष के बीच मादक द्रव्य व्यसन ग्रहण करने वाले 30% उत्तरदाता रहे। 16 वर्ष से 20 वर्ष के बीच 50% उत्तरदाता व 20 वर्ष से 24 वर्ष के बीच 10% उत्तरदाता तथा, 24 वर्ष के पश्चात 5% उत्तरदाताओं ने मादक द्रव्य पहली बार ग्रहण करने की बात कही।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

इस प्रकार इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि मादक द्रव्य व्यसन करने वाले ज्यादातर व्यसनी एकल परिवार से थे जबकि इसकी अपेक्षा संयुक्त परिवार के मात्र 30% लोग मादक द्रव्य व्यसन करने वाले थे। शैक्षिणिक स्तर की दृष्टिकोण से मादक द्रव्य ग्रहण करने वालों में हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा ग्रहण करने वाले 50% तथा व्यसायिक शिक्षा वाले 20% स्नातक/स्नाकोत्तर की शिक्षा ग्रहण करने वाले, 15% प्राइमरी/मिडिल वाले, 10% तथा अशिक्षित 5% उत्तरदाता रहे। इस प्रकार मादक द्रव्य व्यसन करने वालों में हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा ग्रहण करने वाले उत्तरदाता सर्वाधिक है। अध्ययन में यह प्राप्त हुआ, कि रू0 5000 से कम आय वाले, 10% 5000 से रू0 10000 आय वाले, 20%, रू0 10000 से रू0 20000 तक मासिक आय वाले 35% उत्तरदाता तथा, रू0 20000 मासिक आय से ऊपर के उत्तरदाताओं 35% मादक द्रव्य व्यसन करने वाले थे, इस प्रकार उच्च मासिक आय वाले उत्तरदाताओं में ड्रग लेने की प्रवृत्ति अधिक होती है।

मादक पदार्थ लेने की शुरूवात करने की समीक्षा करने पर ज्ञात हुआ कि साथियों के उकसाव से 25%, विवाह उत्सव, तीज त्यौहार से शुरूवात करने वाले 40%, परिवारिक तनाव या गम को भुलाने में 10%, थकान को मिटाने में 15%, अन्य कारणों को 10% उत्तरदाताओं में उत्तरदायी बताया। इस प्रकार तीज त्यौहार, विवाह, उत्सव से ड्रग लेने की शुरूवात करने वाले सर्वाधिक रहे। मादक द्रव्य ग्रहण करने वाले स्थान के बारे में 40% उत्तरदाताओं ने घर पर, 40% ने निर्जन स्थान, 10% ने परिक्वत भवन तथा 10% ने अन्य कारणों को उत्तरदायी बताया। इस प्रकार सर्वाधिक घर पर निर्जन स्थान पर मादक द्रव्य ग्रहण करने वाले सर्वाधिक उत्तरादाता रहे।

मादक द्रव्य के प्रकार में 50% ने शराब, 20% हिरोइन और अफीम, 20% ने गांजा, भांग तथा 10% उत्तरदाताओं ने अन्य प्रकार के मादक द्रव्य लेने की बात स्वीकार की इस प्रकार सर्वाधिक 50% उत्तरदाताओं ने शराब लेने की बात स्वीकार किया। नशा प्राप्त करने के विवेचन करने पर प्राप्त होता है कि 60% ने डीलर से, दुकान से 20%, 5% मित्र से, 5% अन्य माध्यम से नशा प्राप्त करने की बात कही। इस प्रकार ज्यादातर मादक द्रव्य व्यसनी ने डीलर के माध्यम से नशा लेने की बात कही। साथ ही 70% उत्तरदाताओं ने अपनी आमदनी से मादक द्रव्य लेने की बात कही मात्र 20% ने माता–पिता की। 10% उत्तरदाता अन्य को स्रोत को खरीदने का माध्यम बताया। उत्तरदाताओं में पहली बार नषे लेने की उम्र 12 वर्ष से पूर्व बताने वाले 50% 12 वर्ष से 16 वर्ष की उम्र वाले 30%, 16 वर्ष से 20 वर्ष वाले उत्तरदाता 50%, 20 वर्ष से 24 वर्ष वाले उत्तरदाता 10% तथा 24 वर्ष के बाद वाले उत्तरदाता 10% रहे। इस प्रकार 16 वर्ष से 20 वर्ष वाले उत्तरदाता पहली बार नषा लेने वाले सर्वाधिक रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रजोरा सुरेश चन्द्र (2010): समकालीन भारत की सामाजिक समस्याएँ, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
2. आहूजा रामः सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन जयपुर (2002), पृ0– 407–32.
3. केरिस ओकले रे चार्ल्स (2002), ड्रग समाज एवं मानव व्यवहार (5वाँ संस्करण) मैकग्रा हिल, बोस्टन, यू0ए0 ISBN-978–0072319637.
4. ग्लासकोट रेमण्ड एम0 ,ससेक्स जेम्स एन0 ,जाफ जेरोम एच0 बाल जान, ब्रिल लियोन (1972): नशीली दवाओं के दुरूपयोग का उपचारः कार्यक्रम, समस्याए, संभावनाए (रिपोर्ट), संयुक्त सूचना सेवा अमेरिकन साइकिएट्रिक एसोसिएशन और नेशनल एसोसिएशन फार मेंटल हेल्थ।
5. रूड रोज ए0, एलेशायर नूह, जिबेल जान ई0 (jan 2016): ड्रग एवं ओपिओइड ओवरडोज से होने वाली मौतों में वृद्धि संयुक्त राज्य अमेरिका 2000–2014, रोग के नियंत्रण एवं रोकथाम सेंटर 164 (50–51): 1378–82, 4 मार्च 2017.
6. केरिस ओकले रे, चार्ल्स (2002) ड्रग समाज एवं मानव व्यवहार (9वाँ संस्करण), मैग्रा हिल,बोस्टन (यू0के0) ISBN: 978. 0072319637.
7. Janetta Rebold Benton,&Diyanni,R. (2012):Arts and culture: and Introduction to the humanities. Prentice Hall.
8. District Nainital,Government of Uttarakhand, India(2024). District Nainital.
9. Nainital.nic.in.https://nainital.nic.in/
10. Drug,in(2024a).Drug Abuse Research in Historical Perspective. Nih.gov;National Academies Press(US).
11. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/books/NBK232965/
12. Drug,I.(1996a). pathway off addiction:opportunities in drug abuse research. National Academy Press, Washington (U.S.).

*****